विंसेन्ट आर्थर स्मिथ : इतिहास लेखन में योगदान

संगीता
इतिहास प्रवक्ता,
रा.व.मा.वि., गुजरानी, जिला भिवानी

सारांश :

विंसेन्ट आर्थर स्मिथ (वी.ए. स्मिथ) भारतीय इतिहास लेखन में अपने मौलिक लेखन के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने मौर्य काल, मुगलकाल, मुद्रा शास्त्र, ललित–कला जैसे विविध विषयों पर लिखा। वी.ए. स्मिथ महोदय ने अपने इतिहास लेखन के द्वारा आने वाली पीढ़ी के इतिहासकारों का मार्गदर्शन किया। प्रो. वी.के. मजूमदार के शब्दों में "जो भी व्यक्ति भारत के प्राचीन इतिहास में शोध का कार्य लेता है, वह विसेन्ट स्मिथ के ऐतिहासिक कार्यों का ऋणी है, क्योंकि या तो वह उसके मतों से सहमत होता है अथवा उसके द्वारा प्रस्तुत व्याख्या की आलोचना करता है।

मुख्य शब्द : आयरिश जाति, ऐतिहासिक कार्यों, विंसेन्ट आर्थर स्मिथ, वास्तुकला

भूमिका :

एक्विल स्मिथ के पुत्र विसेन्ट आर्थर स्मिथ का जन्म 3 जून 1843 ई. में डबलियन में हुआ था। वे आयरिश जाति के थे। वह अपने पिता की तेरह संतानों में से पाँचवा था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् उन्होंने उत्तम योग्यता के साथ डबलियन के ट्रिनटी कॉलेज से एम.ए. की उत्तम योग्यता प्राप्त की और ऑक्सफोर्ड से डी.लिट् की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् 1871 ई. में आई.सी.एस. (Indian Civil Service) के रूप में भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्तों और अवध के वरिष्ठ अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए गंगाघाटी के प्राचीन स्थलों, अवशेषों के अध्ययन के लिए उन्हें अवसर प्राप्त हुआ।[1] स्मिथ के पिता की रूचि भी प्राचीन अवशेषों के प्रति रही है, जिसका प्रभाव स्मिथ पर पड़ा था। भारत की प्राचीनता के प्रति रूचि ने कालान्तर में डॉ. स्मिथ को भारत के एक इतिहासकार के रूप में प्रस्तुत कर दिया।[2]

डॉ. स्मिथ का विवाह स्लीगों के विलियम किलफोर्ड की पुत्री मेरी एलिजाबेथ से हुआ था, जिससे 3 पुत्र और 1 पुत्री थी। भारत में उत्तम प्रशासकीय सेवा में रहते हुए डॉ. स्मिथ सन् 1900 ई. में सेवामुक्त हुए। उनकी सेवाओं से प्रसन्न होकर 1918 ई. में उसे स्वर्ण पदक पुरस्कार प्रदान किया गया। ऑक्सफोर्ड के भारतीय इतिहास विभाग के रीडर पद पर उनकी नियुक्ति नहीं हुई तो वे कुछ निराश अवश्य रहे, परन्तु उन्हें 1919 ई. में C.I.E. का पद प्रदान किया गया। 6 फरवरी, 1920 ई. को इनकी ऑक्सफोर्ड में ही मृत्यु हो गई।

डॉ. स्मिथ ने भारतीय इतिहास से संबंधित अनेक ग्रन्थों की रचना की तथा अनेक शोध प्रबन्धों को प्रकाशित किया।

भारत का बौद्ध सम्राट अशोक :

वी.ए. स्मिथ द्वारा लिखी गई यह पुस्तक बहुत प्रसिद्ध हुई। उनके जीवनकाल में यह तीन (1901, 1909 तथा 1920) बार प्रकाशित हुई। किसी भारतीय राजा के बारे में अंग्रेजी में लिखा गया वह पहला ग्रन्थ है।[3] इस ग्रन्थ के पश्चात् डी.आर. भण्डारकर ने 1925 ई. में, रोमिला थापर ने 1961 ई. में व डॉ. आर. के. मुखर्जी आदि विद्वानों ने अशोक पर रचनाएं की। स्मिथ के ग्रंथ की यह विशेषता थी कि उन्होंने अशोक के अभिलेखों का अंग्रेजी अनुवाद और मूल भी दिया।

भारत का प्रारम्भिक इतिहास :

इस ग्रन्थ का चौथा संस्करण 1924 ई. में प्रकाशित हुआ। यह भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध 'पथ प्रदर्शक' ग्रन्थ हैं।[4] इस पुस्तक के संबंध में डॉ. स्मिथ का कथन है कि "भारत के राजनैतिक इतिहा के 18 सदियों की मुख्य घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।"

भारतीय संग्रहालय में सिक्कों की सूची (1906) :

स्मिथ का यह ग्रंथ मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में अद्वितीय रहा है। यह उच्चतर एवं शोध के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी रहा। विशेषतः जो प्राचीन भारतीय इतिहास एवं मुद्राशास्त्र में रूचि रखते हैं।

भारत का ऑक्सफोर्ड इतिहास :

इस पुस्तक में प्रारम्भिक काल से 1911 ई. तक का इतिहास दिया गया है। यह ग्रंथ अपने आप में अद्वितीय है और किसी भारतीय ने प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक काल के इतिहास को इतने विस्तृत रूप में नहीं लिखा।

लंका और भारत में ललित कला का इतिहास (1911) :

डॉ. स्मिथ ने वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला का विवरण अपने इस ग्रंथ में दिया है, जो अपने पूर्ववर्ती लेखकों से विस्तृत प्रकार का है।[5] स्मिथ का विवरण समीक्षात्मक और विश्लेषणात्मक है।

अकबर दी ग्रेट मुगल :

मध्यकालीन सम्राट अकबर के बारे में स्मिथ द्वारा लिखा गया महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।[6] इसमें उन्होंने तत्कालीन साक्ष्यों को आधार बनाया और शोध संबंधी यह मूल ग्रन्थ माना गया। अकबर के बारे में स्मिथ से पहले भी कई विद्वान इसका वर्णन कर चुके हैं। यह कार्य उन्होंने 1915 ई. में प्रारम्भ किया और 1917 ई. तक पूरा किया। स्मिथ ने इस ग्रन्थ में पारसीक लेखकों, पुरातात्त्विक साक्ष्यों, समकालीन ग्रन्थों तथा उपलब्ध हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को बहुत न्याय–संगत ढंग से उपयोग किया।[7] यह पुस्तक वैज्ञानिक

दृष्टिकोण, विस्तृत जानकारी एवं आकर्षक साहित्य शैली के लिए प्रसिद्ध है। डॉ. स्मिथ ने अकबर के 'दीन–ए–इलाही' के विषय में लिखा है कि यह अकबर की बुद्धिमत्ता का नहीं अपितु मूर्खता का परिचायक है।

शोध निबन्ध :

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त डॉ. स्मिथ ने महान् मुगल सम्राट अकबर नामक ग्रंथ लिखा।[8] इन ग्रंथों के अतिरिक्त डॉ. स्मिथ ने विभिन्न शोध–पत्रिकाओं में भारतीय इतिहास, कला, पुरातत्त्व और मुद्राओं पर शोध निंबंध लिखो। जिस में मुख्य है –

क्वाइनेज ऑफ द अर्लीऑर इम्पीरियल गुप्ताज (जे.आर.ए.एस., 1889)

समुद्र हिस्ट्री (जे.आर.ए.एस., 1897)

आन्ध्र हिस्ट्री एण्ड क्वाइनेज (जेड.डी.एम.जी., 1923)

द कुषाण ऑर इण्डो–सिथियन पीरीयड़ आफ इण्डियन हिस्ट्री (जेड.आर.ए.एस., 1900)

इसके अतिरिक्त भी अनेक शोध निबन्धों को डॉ. स्मिथ ने लिखकर भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इतिहास लेखन एवं दृष्टि :

डॉ. स्मिथ ने अपने इतिहास लेखन के संबंध में विचार व्यक्त किया है कि इतिहास का मूल्य और रूचि विशेषतः उस आधार पर निर्भर करती है कि अतीत के द्वारा किसी सीमा तक वर्तमान के ज्ञान के लिए अतीत का एक साधन के रूप में प्रयोग करना और भविष्य का नियोजन करना इतिहास का व्यवहारिक उपयोग है।

ऐतिहासिक पद्धति :

डॉ. स्मिथ 19वीं शताब्दी के ब्रिटेन के उत्पाद थे। पश्चिमी विचारों से प्रभावित तत्वों को आवश्यक रूप से इतिहास शास्त्र में अनुप्रवेश किया।[9] डॉ. स्मिथ ने भारतीय साहित्य, ब्राह्मण, बौद्ध एवम् जैन धर्मों के मिथ (Myth) तथा आख्यानों की भूलभुलैया से इतिहास को पृथक कर राजनैतिक इतिहास को पृथक कर राजनैतिक इतिहास को तिथि क्रमानुसार प्रस्तुत किया। परन्तु उन्होंने मात्र वंशावली और नरेशों का विवरण न देकर एक सतर्क परीक्षण और विश्लेषण की दृष्टि से अपनी पद्धति को विकसित किया।[10] डॉ. स्मिथ की ऐतिहासिक पद्धति की प्रशंसा में प्रो. मजूमदार का कथन है कि "एक इतिहासकार के रूप में स्मिथ का व्यक्तित्व वैज्ञानिक और कलाकार का समन्वय था। वे एक वास्तविक अन्वेषक थे और उनकी मुख्य विशेषता विषय की गंभीरता और कार्य–कारण, सिद्धान्त पद्धति है। जो एक इतिहासकार क लिए नितान्त आवश्यक है।

व्याख्या एवं रचना :

डॉ. आशम का मत है कि स्मिथ एक वीर पूजक इतिहासकार थे। उन्होंने अनेक महान् भारतीय शासकों के राजनीतिक पक्षों को प्रस्तुत किया है।[11] स्मिथ के विचार से अलेक्जेंडर सबसे महान् वीर था। जिसकी उन्होंने पर्याप्त प्रशंसा, अपने 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' ग्रंथ के पृष्ठों में की है। स्मिथ ने भारतीय इतिहास की व्याख्या के विषय में लिखा है कि सामाजिक और राजनैतिक रचा में निरंकुश राजतन्त्र और अनियंत्रित सामाजिक व्यवस्था थी। उन्होंने डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल के इस मत का खण्डन किया है कि भारतीय राजतंत्र में राजा वैधानिक तथा सीमित और नियंत्रित सम्राट होता था।[12]

डॉ. बाशम का मत है कि अपने सम्पूर्ण विषयों के लिखन में स्मिथ स्पष्टतः एक एंग्लो–फिल व्यक्ति थे। वे एक एंग्लो–आयरिश भूपति परिवार के सदस्य थे। जिनके पूर्वज क्रामव्रेल के काल में आयरलैण्ड में जाकर बस गये थे। उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि स्पष्टतया डबलियन के मध्यवर्गीय धनाढ्य प्रोइंगलिश प्रोटेस्टैट की थी। इन्हीं परिस्थितियों की उपज विंसेट स्मिथ थे, जिससे बाध्य होकर उन्होंने अपने लेखन में प्रायः ब्रिटिश और यूरोपीय श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया है।

निष्कर्ष

डॉ. स्मिथ यद्यपि प्राचीन भारतीय अध्ययन, व्याख्या और अन्वेषण में कहीं–कहीं निष्पक्ष नहीं हो पाये हैं, परन्तु एक आधुनिक इतिहासकार के रूप में इतिहासलेखन के क्षेत्र में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। विशेषकर भारत के राजनीतिक और कला के इतिहास लेखन में उनका योगदान प्रशंसनीय है। इसीलिए प्रो. मजूमदार ने लिखा है कि "डॉ. स्मिथ आधुनिक भारत के एक प्रसिद्ध इतिहासकार थे।"

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. कुंवर बहादुर कौशिक, 'इतिहास–दर्शन एवं प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन', पृ. 178
2. पूर्वोद्धत, पृ. 179
3. बी.ए. पाण्डक, 'एन्शियन्ट हिस्टोरियन्स ऑफ इण्डिया, पृ. 35
4. पूर्वोद्धत, पृ. 38
5. आर.के. मजूमदार, श्रीवास्तव, ए.एन. हिस्टोरियोग्राफी, पृ. 57
6. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन, पृ. 181
7. बी.एस. पाठक, 'एन्शियन्ट हिस्टोरियन्स ऑफ इण्डिया, पृ. 33
8. कुंवर बहादुर कौशिक, इतिहास दर्शन एवं प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन, पृ. 18
9. पूर्वोद्धत, पृ. 180
10. पूर्वोद्धत, पृ. 181

11. आर.के. मौजूमदार, ए.एन. श्रीवास्तव, हिस्ट्रोरियो ग्राफी, पृ. 58

12. कुंवर बहादुर कौशिक, इतिहास दर्शन एवं प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन, पृ. 182